International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 10-01-2025, Accepted: 12-02-2025, Published: 27-02-2025
Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 26-29

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का कॉमन हाइब्रिड मॉडल

चन्द्रभान सिंह राठौड
राजनीति विज्ञान विभाग, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, राज्यस्थान, भारत

सारांश
अंतर्राष्ट्रीय राजनीति उस राजनीति को संदर्भित करती है,जिसमें अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय सभी स्तरों को सम्मिलित किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में मुख्य रूप से दो मॉडल पर चर्चा की जाती है बिलियर्ड बॉल मॉडल और कॉबवेब मॉडल।
वर्तमान की बदलती परिस्थितियों में इन दोनों मॉडल के समान गुणों वाला कॉमन हाइब्रिड मॉडल बनता हुआ दिख रहा है। क्या कॉमन हाइब्रिड मॉडल शुरुआती परिस्थितियों से ही दिखायी देने लगा था? वर्तमान में यह मॉडल किस प्रकार से अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है? यह जानना महत्वपूर्ण है।

मूलशब्द: अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, वेस्टफेलियन संधि, बिलियर्ड बॉल मॉडल, कॉबवेब मॉडल, कॉमन हाइब्रिड मॉडल

वेस्टफेलियन संधि (1648) को आमतौर पर आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की शुरूआत का प्रतीक माना जाता है। यह शांति संधियों की एक श्रृंखला थी जिसने तीस वर्ष के युद्ध (1618–1648) को समाप्त कर दिया जिसमें पूरे मध्य यूरोप में घोषित और अघोषित युद्धों की एक श्रृंखला शामिल थी जिसने पवित्र रोमन साम्राज्य और डेन, डच सहित विभिन्न विरोधियों को शामिल किया गया था। तथाकथित वेस्टफेलियन सिस्टम दो प्रमुख सिद्धान्तो पर आधारित था।

1. राज्य संप्रभु का अधिकार क्षेत्र का आनंद लेते है। इस अर्थ में कि उनके क्षेत्र में जो कुछ भी होता है, उस पर उनका स्वतंत्र नियंत्रण होता है। इसलिए अन्य सभी संस्थान, समूह, राज्य के अधीनस्थ है।
2. राज्यों के बीच संबंधो को सभी राज्यो की सप्रंभु स्वतंत्रता की स्वीकृति द्वारा संरचित किया गया है, यह दर्शाता है कि राज्य कानूनी रूप से समान है।

इस प्रकार वेस्टफेलियन संधि द्वारा ही राज्य की विशिष्ट विशेषता के रूप में संप्रभु की स्थापना हुई। जो आगे चलकर अतंर्राष्ट्रीय राजनीति का प्राथमिक सिंद्धात बन गई। इसी के फलस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली को राज्य व्यवस्था के रूप में चित्रित किया जाता है।

बिलियर्ड बॉल मॉडल

राज्य केंद्रीत दृष्टिकोण को तथाकथित बिलियर्ड बॉल मॉडल के माध्यम से चित्रित किया गया है, जो 1950 के बाद के अंतर्राष्ट्रीय संबंधो में दिखायी देता है। यह विशेष रूप से यथार्थवादी सिद्धांत से जुड़ा था। इस मॉडल के अनुसार राज्य बिलियर्ड बॉल की तरह अभेद्य और स्वनिहित इकाइयां है, जो बाहरी दबाव के माध्यम से एक दूसरे को प्रभावित करते है। जो टेबल पर घूमते है और एक दूसरे से टकराते है। जैसा कि चित्र 1.1 में दिखाया गया है। राज्यो के बीच टकराव ज्यादातर सैन्य व सुरक्षा मामलों से जुड़ा है, जो यह दर्शाता है कि सत्ता और अस्तित्व राज्य की प्राथमिक चिंताए है।

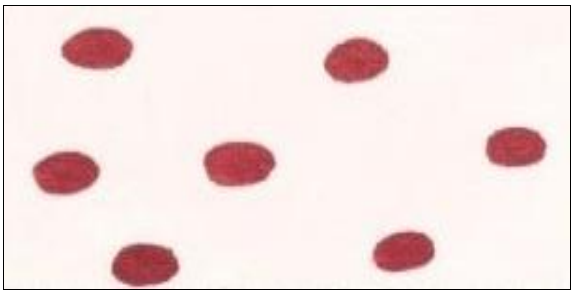

चित्र 1.1: बिलियर्ड बॉल मॉडल

बिलियर्ड बॉल मॉडल के निहितार्थ

- राज्य द्वारा अपनी सीमाओं के भीतर व्यवस्था बनाए रखना एवं विनियमन करना।
- अतंर्राष्ट्रीय व्यवस्था के भीतर संघर्ष और संहयोग के पैटर्न बड़े पैमाने पर राज्यो के बीच शक्ति के वितरण से निर्धारित होते हैं।

कॉबवेब मॉडल

1950 के बाद से बदलती परिस्थितियों के परिणामस्वरूप बिलियर्ड बॉल मॉडल के स्थान पर कॉबवेब मॉडल (चित्र 1.2) दिखायी देने लगा। कॉबवेब मॉडल राज्यो के मध्य जटिल अन्योन्याश्रितता की स्थिति को दर्शाता है। जिसे कोहेन व नाए ने परिभाषित किया था। इसमें राज्यो के मध्य परस्पर निर्भरता पायी जाती है।

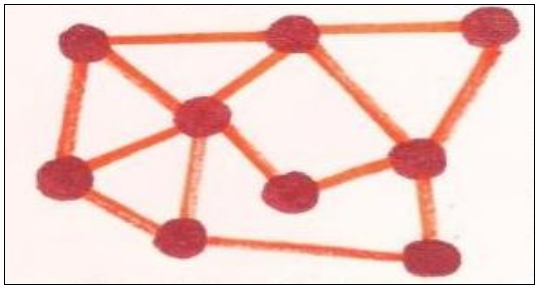

चित्र 1.2: कॉबवेब मॉडल

कॉबवेब मॉडल के कारक

- वैश्वीकरण अंतर्राष्ट्रीय प्रवाह जैसे रू लोगो की आवाजाही, पैसाएसूचना और संचार का आदान प्रदान।
- आर्थिक विकास एवं समृद्धि को बढ़ावा देने, वैश्विक समस्याओं से निपटने हेतु सभी देशों के सामुहिक प्रयास जैसे पर्यावरणीय एवं COP सम्मेलन, UNO, WTO वार्ता आदि।

इस प्रकार कॉबवेब मॉडल राज्यो के मध्य पारस्परिक निर्भरता अन्योन्याश्रितता की स्थिति को दर्शाता है, जिसमें सभी राज्य वैश्विक पटल पर एक दूसरे से प्रभावित, आश्रित एवं निर्भर होते है।

CH कॉमन हाइब्रिड मॉडल– अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में बिलियर्ड बॉल मॉडल एवं कॉबवेब मॉडल के अतिरिक्त एक अन्य मॉडल दिखाई देता है, जिसे कॉमन हाइब्रिड मॉडल कहा जा सकता है। चुंकि कॉमन हाइब्रिड मॉडल में बिलियर्ड बॉल मॉडल व कॉबवेब मॉडल दोनों के लक्षण दिखाई देते है।

कॉमन हाइब्रिड मॉडल को मुख्य रूप से तीन प्रकार से दर्शाया गया है–

CH-1 कॉमन हाइब्रिड मॉडल र्प्रथम (जब दुनिया तीन ध्रुवों मे विभाजित हुई)

इस मॉडल में 1950 के बाद, जब USA. ने नाटो का निर्माण करके पहली दुनिया, USSR ने वारसा संधि द्वारा दूसरी दुनिया बनायी तथा शेष विश्व को तीसरी दुनिया कहा जाने लगा, उक्त परिस्थितियां शामिल है। यहां तीनो अलग–अलग रूप में विश्व पटल पर अपना अस्तित्व कायम करने में लगे थे, जिन्हें हम विश्व में तीन बिलियर्ड बॉल (चित्र 1.3) के माध्यम से समझ सकते है।

चित्र में A-USA समूह B-USSR समूह, C तीसरी दुनिया।

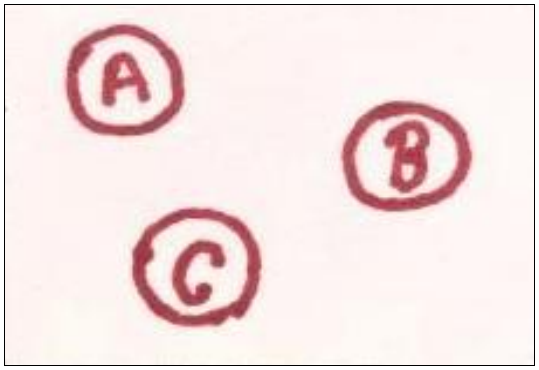

चित्र 1.3: बिलियर्ड बॉल के समान

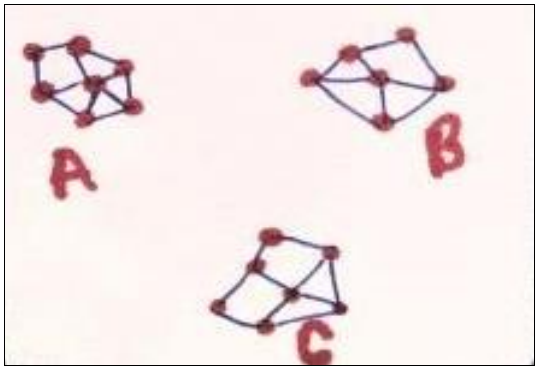

चित्र 1.4: कोबवेब के समान

यहां एक तरफ हमें कोबवेब (चित्र 1.4) के लक्षण भी दिखाई देते है जहां तीनों। एठएब् अपने–अपने देशों के साथ पारस्परिक संबंध भी बनाते है तथा उनके हितों के लिए कार्य करते है। एक देश पर आए संकट को पूरे समूह का संकट मानकर आपस में सहायता करते है।

CH-2 कॉमन हाइब्रिड मॉडल द्वितीय (जब विश्व अनेक क्षेत्रों में विभाजित हुआ) यह मॉडल भी 1950 के बाद से ज्यादा विकसित हुआ, इसमें विश्व के अनेक देशों ने अपने क्षेत्रीय देशों के साथ मिलकर संगठन निर्माण किए। इन संगठनों का निर्माण मुख्य रूप से अर्थव्यवस्था, विकास, सहयोग, सैन्य शक्ति, सांस्कृतिक आदान–प्रदान आदि को बढावा देने के लिए किया गया।

विश्व में यदि इन संगठनों को विश्व देखा जाए तो यह बिलियर्ड बॉल के समान दिखाई देते है जैसेः–EU, AU, GCC, SCO, आसियान, SAARC, अल्बाए ओपेक, अरब लीग, LAIA आदि। इन संगठनों को हम चित्र में. A,B,C,D,E,F से व्यक्त कर रहे है।

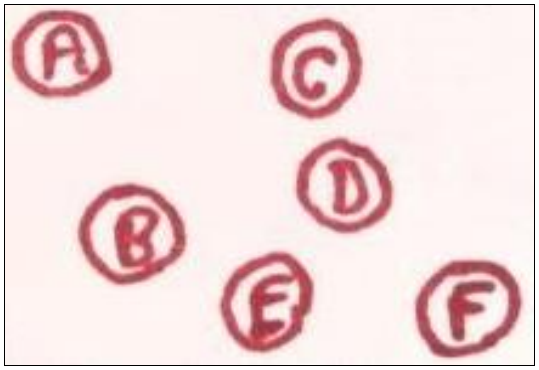

चित्र 1.5: बिलियर्ड बॉल के समान

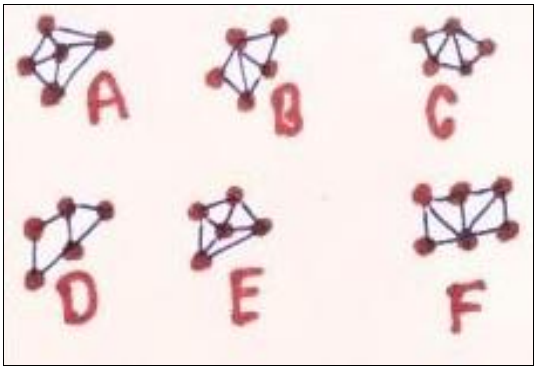

चित्र 1.6: कोबवेब के समान

कॉमन हाइब्रिड मॉडल द्वितीय दो प्रकार से कोबवेब के समान व्यवहार करता है।

1. जब इन संगठनों के देशों द्वारा सम्मेलन कर आपस में अपने हित, सुरक्षा, विकास की बात की जाती है
2. एक संगठन द्वारा अपने सम्मेलन में दूसरे देशों एवं संगठनों को पर्यवेक्षक एवं मेहमान के रूप में आंमत्रित करके पारस्परिक हित एवं विकास पर चर्चा की जाती है

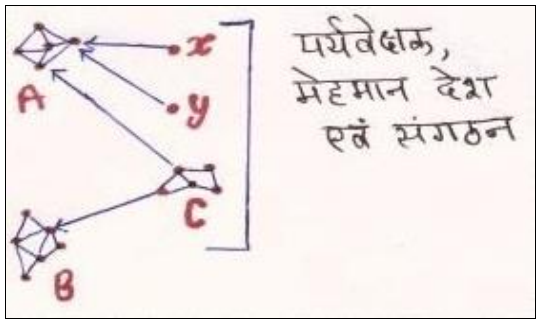

चित्र 1.7: कोबवेब के समान

उदाहरण

1. आसियान के सम्मेलन में आसियान के देशों के साथ जब आसियान+3 के रूप में चीन, जापान, दक्षिण कोरिया को बुलाया जाता है।
2. जब आसियान+ CER(closer economic relation) में आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड को बुलाया जाता है।
3. जब ओपेक की सम्मेलन में 2016 मे 10 अन्य देशों को शामिल कर ओपेक प्लस (OPEC+) नाम दिया गया
4. शार्क द्वारा 2006 से अपने स्थायी पर्यवेक्षक देश बनाने प्रारंभ किए।

CH-3 कॉमन हाइब्रिड मॉडल तृतीय (जब विश्व में ध्रुवीयता और क्षेत्रीयता से परे संगठनो, परियोजनाओ का निर्माण हुआ।)

इस मॉडल में मुख्य बिन्दु यह है कि विश्व के अनेक देशों ने अपनी ध्रुवीयता की प्रवृति, क्षेत्रवाद की भावना से ऊपर उठकर वैश्विक स्तर पर दूसरे देशों के साथ संगठन, समझौते, सैन्य अभ्यास, सम्मेलन करने प्रारंभ किए। जैसे–G-20, G-24, G-77, इब्सा, ब्रिक्स, G-7, G-15, quad,

महत्वपूर्ण समझौते एवं परियोजना– RCEP(Regional Comprehensive Economic Partnership), IPEF(The Indo-Pacific Economic Fram work), BRI(The Belt and Road Initiative), INSTC (The International North-South Transport Corridor), MGC (The Mekong-Ganga Cooperation), IORA (The Indian Ocean Rim Association), NSG(The Nuclear Suppliers Group)

विभिन्न देशों के संयुक्त सैन्य अभ्यास (मालाबार, Defender Europe सैन्य अभ्यास आदि।)

कॉमन हाइब्रिड मॉडल तृतीय में प्रतिस्पर्धा की भावना को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जहां G-7 समूह के सामने G-77(G-24) समूह खड़ा होता है। वहीं सहयोग के रूप में G-20 समूह मे सभी साथ बैठकर विश्व पटल पर आते है।

जहां भारत IPEF, QUAD में शामिल है, वहीं चीन BRI- के रूप में प्रतिस्पर्धा करता है तथा G-20 में दोनो देश सहयोगी के रूप में एक साथ बैठते है। इस मॉडल में उभयनिष्ठ हिस्सेदारी सर्वाधिक दिखायी देती है। चुंकि एक देश अनेक विश्वस्तरीय संगठनों समझौतो, परियोजना एवं संयुक्त सैन्य अभ्यासो में भाग लेता है।

चित्र 1.8 व 1.9 में कॉमन हाइब्रिड मॉडल तृतीय को देख सकते है, यह क्रमशः बिलियर्ड बॉल एवं कॉबवेब मॉडल के लक्षण प्रदर्शित कर रहा है।

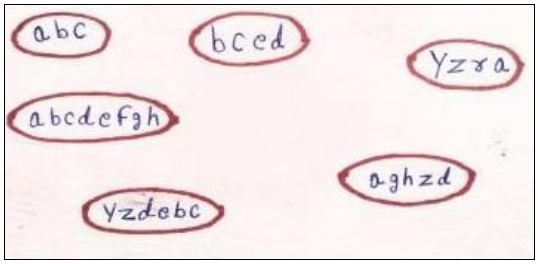

चित्र 1.8: बिलियर्ड बॉल के समान चित्र

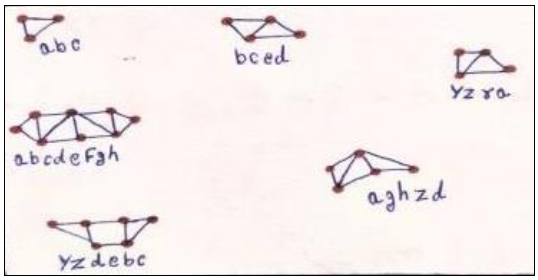

चित्र 1.9: कोबवेब के समान

यहां a, b, c, d, e, f .आदि देश है, जो अलग–अलग संगठनों में जुडे हुए है तथा एक देश अनेक संगठनों का हिस्सा है (उभयनिष्ठताद्ध। यहां संगठन, समझौते, सैन्य अभ्यास बिलियर्ड बॉल (चित्र 1.8) की तरह विश्व पटल पर दिखायी दे रहे है एवं चित्र 1.9 में यह कॉबवेब लक्षण दर्शा रहा है, जहां अनेक संगठनो सैन्य व अभ्यासों समझौतो मे यह देश पारस्परिक निर्भरता, जटिल अन्योन्याश्रितता प्रकट कर रहे है।

निष्कर्ष

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को समझने में बिलियर्ड बॉल मॉडल एवं कॉबवेब मॉडल के बाद नया कॉमन हाइब्रिड मॉडल विश्व को एक नई दिशा में समझने की दृष्टि प्रदान करता हैं। कॉमन हाइब्रिड मॉडल प्रथम जहां विश्व को तीन ध्रुवों में बांटकर रुवीयता एवं प्रतिस्पर्धा को समझाता है। वहीं कॉमन हाइब्रिड मॉडल द्वितीय क्षेत्रवाद की प्रबल अभिव्यक्ति के साथ सहयोगी भावना भी प्रदर्शित करता है। इसी तरह कॉमन हाइब्रिड मॉडल तृतीय सम्पूर्ण विश्व में सहयोग, प्रतिस्पर्धा एवं उभयनिष्ठ हिस्सेदारी के रूप में देशो के स्वरूप एवं योगदान को प्रकट करता है। तीनों कॉमन हाइब्रिड मॉडल में मुख्य बात यह है कि परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न देश अपने राष्ट्रीय हित एवं राष्ट्रीय शक्ति को प्राप्त करने के लिए स्वयं को विश्व पटल पर अनेक स्थितियों में रखते है।

संदर्भ सूची

1. Global Politics (by Andrew Heywood)
2. International Relation (by B.L. Fadia)
3. International Politics (by U.R. Ghai)